रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष—5 **अंक 49** **मार्च 2011** **मूल्य: 5रू.**

बेहतर कल की ओर (जैविक खेती)

जैविक खेती अपनाओ, विषमुक्त अनाज पाओ

हमारे देश में कई तरह की क्रांति (किसी काम का बड़े स्तर पर होना) हुई हैं, जैसे हरित क्रांति (अन्न की पैदावार में), पीली (तिलहन), नीली (मछली), सुनहरी (फल और सब्जियाँ) और सफ़ेद (दूध) आदि। लेकिन इन सबमें हरित क्रांति बहुत महत्वपूर्ण है। सन् 1970 के दशक में हरित क्रांति के कारण देश में बड़े स्तर पर अनाज कई गुना बढ़ा है। यह खेती अधिक मात्रा में रासायनिक खाद, कीटनाशक और बड़े स्तर पर खेती तकनीक पर आधारित थी। इस तकनीक से गेहूँ और चावल की पैदावर तो कई गुना बढ़ा है। लेकिन धीरे–धीरे किसान एक ही तरह की खेती करने लगे जिससे देशी खेती करने का तरीका (कई प्रकार की फसलें उगाना) बहुत कम हो गया। लागातार एक ही फसल उगाने से, अधिक मात्रा में रासायनिक खाद डालने से, कीटनाशकों के गलत प्रयोग से और हरी देशी खाद के कम उपयोग करने के कारण फसल की पैदावार पर बुरा असर पड़ रहा है। मिटटी की ताकत कम होती जा रही है और तेल, दाल, तिलहन, ज्वार, बाजरा की पैदावार खत्म होने के कगार पर आ गई। दालों, ओर तिलहन (तेल वाली दालें) की पैदावार में कमी के कारण दाल के दामों में बढ़ोतरी हुई है और गरीब आदमी को दाल मिलना मुश्किल हो गई है। ऐसे कई तरह की दालें है जो देशी (जैविक) तरीके से उगाई जा सकती हैं जैसे उढ़द, मूंग, लोबिया, गहत, मसूर आदि। रसायनिक खाद के इस्तेमाल से शुरू में ऐसा लगता है कि पैदावार बढ़ रही है लेकिन इसका लगातार उपयोग धरती को बेकार और बंजर बना देती है। इनकी ऊँची कीमते हजारों किसानों को कर्ज में डूबाकर उनकी आत्महत्या का कारण भी बन रही है। इस बार की बरली की दुनिया आपको रसानिक खेती के नुकासान, जैविक खेती क्या होती, उसके फायदे और उसे कैसे करे ये जानकारी लेकर आ रही है।

रासायनिक खेती से होने वाले नुकसान: इस तरह की खेती से कई प्रकार के नुकसान होते हैं।

रासायनिक खाद केवल फसल व मिटटी को ही हानि नहीं

पहुँचाती बल्कि ये पानी, हवा आदि में मिलकर हमारे जीवन के लिए भी खतरनाक हैं। हमारे साथ–साथ वे जानवरों के जीवन के लिए भी खतरा पैदा करती है और हमारे आस–पास के माहौल (पर्यावरण संतुलन) को बिगाड़ती है। इसका बुरा प्रभाव सभी प्राकृतिक चीजों पर पड़ा है जैसे– मिट्टी, पानी का स्तर, जैवविविधता (अलग–अलग जीवों का होना), भोजन कड़ी श्रंखला (एक जीव दूसरे का भोजन), कीट पतंग आदि।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारकः खेती में रासायनिक खाद अधिक मात्रा के होने के कारण कई तरह की बीमारियाँ पैदा हो गई हैं जैसे त्वचा सम्बन्धी समस्याएं, प्रजनन अंगों की बीमारी, कैंसर, बाँझपन, नंपुसकता, साँस सम्बन्धी समस्याएं, दिमाग का सही काम न करना, पेट व जिगर, गुर्दे खराब होना, अस्थमा आदि। भारत में सैंकड़ो लोग कीटनाशक के प्रभाव के कारण मर जाते हैं।

रासायनिक खाद और कीटनाशकों के उपयोग का बुरा असर लंबे समय तक बना रहता है। अध्ययन बताते हैं कि किसान और उनके परिवार के सदस्यों पर इन ज़हरीले पदार्थो का सबसे अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वे गलत तरीके से खेतों में कीटनाशको का छिड़काव करते हैं और नंगे हाथों से मिलाकर इन्हें खेतों में डालते हैं। एक शोध (खेतों में महिलाओं पर कीटनाशकों का प्रभाव 2002) में पता चला कि जो महिलाएँ कीटनाशकों का प्रयोग बड़े स्तर पर कर रही थी। उनमें साँस की बीमारियाँ पाई गई।

कीटनाशक जिनका उपयोग करना, बेचना और बनाना सरकार ने पूरी तरह बंद कर दिया है वह है आल्ड्रिन अल्दिकार्ब, कैल्सियम सयिनैद, डी.बी.सी.पी.क्लोरादेन, दिल्ड्रिन इंद्रिन, मैनाजों आदि।

जैविक खेती

जैविक खेती, खेती का वह तरीका है, जिसमे प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखते हुए ज़मीन, पानी, हवा को बिना नुकसान पहुचाएँ, लंबे समय तक खेती की जाती है जिससे हमारा पर्यावरण साफ सुथरा रहेगा और हमें बीमारियों भी नहीं होंगी।

इस प्रकार की खेती में रासायनिक खादों का प्रयोग कम से कम व जरूरत के अनुसार किया जाता है। जैविक खेती जीवों के सहयोग से की जाने वाली खेती के तरीके को कहते हैं। प्रकृति ने स्वयं संचालन के लिए जीवों का विकास किया है जो प्रकृति को पुनः ऊर्जा प्रदान करने वाले जैव संयंत्र भी हैं। यही जैविक व्यवस्था खेतों में कार्य करती है। खेतों में रसायन डालने से ये जैविक व्यवस्था नष्ट होने को है तथा भूमि और जल–प्रदूषण बढ़ रहा है। खेतों में हमें उपलब्ध जैविक साधनों की मदद से खाद, कीटनाशक दवाई, चूहा नियंत्रण हेतु दवा वगैरह बनाकर उनका उपयोग करना होगा। इन तरीकों के उपयोग से हमें पैदावार भी अधिक मिलेगी एवं अनाज, फल सब्जियां भी विषमुक्त एवं उत्तम होंगी। प्रकृति के सूक्ष्म जीवाणुओं एवं जीवों का तंत्र पुनः हमारी खेती में सहयोगी कार्य कर सकेगा। जैविक खेती में इन सूक्ष्म जीवाणुओं का सहयोग खाद बनाने एवं तत्वों की पूर्ति हेतु मदद लेते है। खेतों में रसायनों से ये सूक्ष्म जीव क्षतिग्रस्त हुए हैं, अतः प्रत्येक फसल में हमें इनके कल्चर का उपयोग करना पड़ेगा, जिससे फसलों को पोषण तत्व उपलब्ध हो सकें।

जैविक खेती के फायदे

⇒प्राकृतिक संसाधनो (पानी, हवा, मिट्टी) को रोका जाता है।)
⇒अच्छी किस्म की फसल उगती है
⇒अलग–अलग किस्म के बीज बोना और कई तरह की फसल उगाई जाती है
⇒कई जगहों पर अलग अलग खेती की जाती है
⇒मिटटी का सरंक्षण होता है
⇒ज़मीन में खेती की बढ़ोतरी होती है
⇒रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं होता
⇒जैविक कीट नियंत्रण का तरीका (देशी कीट नियंत्रण) अपनाया जाता है
⇒पोषण चक्र को बनाए रखता है
⇒कम लागत में अधिक आय

जैविक खेती में अपनाई जाने वाली तकनीक

भूमि प्रबंधनः जैविक खेती में सही तरीके से जमीन का उपयोग किया जाता है। इसे भूमि प्रबंधन कहते है। भूमि प्रबंधन ऐसे की जाती हैः

⇒ज़मीन उपयोग के कई तरीके हैं जैसे खेत की मिटटी खेत में रहे इसके लिए खेत के चारों और नाली व हलकी मेड़ बनाए।
⇒ज़मीन की ताकत के अनुसार ही फसल उगाए।
⇒कम से कम जुताई का तरीका अपनाए
⇒हर साल खेत के कुछ हिस्सों में हरी खाद की फसल बोये जैसे सनाई, ढेंचा आदि
⇒सही फसल चक्र अपनाए
⇒ज़मीन पर कचरा, जीवांश न जलाए
⇒कटाई के बाद बची हुई फसल जैसे खरपतवार को ज़मीन

में मिला दे या उसका खाद बनाए

⇒जीवांश खादों का अधिक उपयोग करे

⇒हल्के कृषि यंत्रो का प्रयोग करे

पौधों का पोषण

खेत से हमने जितना पोषण लिया है उसे खेत को वापस देना ज़रुरी है इसलिए हरी खाद डालकर हम इस कमी को पूरी कर सकते हैं।

देशी (जैविक) तरीके से पौधों/फसल की ताकत ऐसे बढ़ा सकते है

⇒मानव, गाय, भैस के मल मूत्र

⇒मटका खाद, अमृत संजीवनी, जिवामिरत आदि

⇒बची फसल, खरपतवार आदि

⇒प्राकृतिक खनिज जैसे राक फास्फेट, जिप्सम पिएरेट

⇒नीम, अरंडी, अलसी की खलिया

⇒जैव खाद पी, एस, एम,

⇒हरी खाद की फसलें जैसे सनइ, ढेंचा आदि।

कीट प्रबंधन

संसार में हजारों प्रकार के जीव पाए जाते हैं, जब जीवों की मात्रा एक स्तर से अधिक हो जाती है और फसलों को नुकसान पहुँचाने लगती हैं तो उन्हें कीट कहा जाता है। जैविक खेती में कीट की मात्रा कम होती है। हमारी देशी खेती इसी कीट नियंत्रण पर आधारित थी।

कीट नियंत्रण ऐसे कर सकते है:–

⇒पाँच पत्ती काढ़ा (इल्ली की रोकथाम के लिए)

पाँच पत्ती काढ़ा बनाने का तरीका

नीम की पत्ती	1.50 किलोग्राम
सीताफल की पत्ती	1.50 किलोग्राम
आंकड़े की पत्ती	1.50 किलोग्राम
धतूरे की पत्ती	1.50 किलोग्राम
बेशर्म की पत्ती	1.50 किलोग्राम

इन सब पत्तियों को मिलाकार 5 लीटर पानी का घोल बना कर इसे उबाले और छाने। एक लीटर के इस घोल को 16 लीटर पानी में मिलाकार छिड़के, इससे फसल में कीट रोग व फफूंद, इल्ली सब नष्ट हो जाती हैं।

⇒ताज़ी छाछ को फसल पर डालने से पौधा स्वस्थ बनता है और फल फूल अधिक लगते हैं।

⇒पुरानी छाछ को पानी में मिलाकर छिड़कने से इल्ली की समस्या दूर जो जाती है।

⇒लहसुन की कलियों को मिट्टी के तेल में डालकर कलियों को मिर्च के साथ पीसकर बनी चटनी को फसल में छिडकाव करने से इल्ली मर जाती है।

⇒एन.पी.वी. वाइरस सब्जी जैसे गोभी, चने, आदि की इल्ली को मारने में काम आता है।

⇒देशी गाय का दूध पानी में मिलाकार छिड़काव करने से मिर्ची की फसल अच्छी होती है।

⇒देशी गाय का मट्ठा 5 लीटर लें। इसमें 3 किलो नीम की पत्ती या 2 किलो नीम खली डालकर 40 दिन तक सड़ायें फिर 5 लीटर मात्रा को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कने से एक एकड़ फसल पर इल्ली/रस चूसने वाले कीड़े नियंत्रित होंगे।

⇒लहसुन 500 ग्राम, 500 ग्राम हरी मिर्च तीखी लेकर बारीक पीसकर 150 लीटर पानी में घोलकर कीट नियंत्रण हेतु छिड़कें।

⇒3 से 10 लीटर गौ मूत्र में 2 किलो अकौआ के पत्ते डालकर 10 से 15 दिन सड़ाकर, इस मूत्र को आधा शेष बचने तक उबालें फिर इसके 1 लीटर मिश्रण को 150 लीटर पानी में मिलाकर रसचूसक कीट/इल्ली नियंत्रण हेतु छिटकें।

इन दवाओं का असर केवल 5 से 7 दिन तक रहता है। अतः एक बार और छिड़कें जिससे कीटों की दूसरी पीढ़ी भी नष्ट हो सके।

बेशरम के पत्ते 3 किलो एवं धतूरे के तीन फल फोड़कर 3 लीटर पानी में उबालें। आधा पानी शेष बचने पर इसे छान लें। इस छने काढ़े में 500 ग्राम चने डालकर उबालें। ये चने चूहों के बिलों के पास शाम के समय डाल दें। इससे चूहों से निजात मिल सकेगी।

अच्छे बीज बनाने का सही तरीका

अच्छी फसल उगाने के लिए अच्छे बीज का होना ज़रुरी है। अच्छा बीज जो फसल की पैदावार बढ़ा सके और जिसमें बीमारी भी न हो ऐसे बीज से फसल अच्छी होगी और फसल के सही दाम भी मिलेंगे।

बीज तीन तरह से बनाये जाते हैं जैसे–

- स्वयं किसान के द्वारा ऐसे बीज जिन्हें किसान स्वंय अपनी देखरेख में ज़मीन के एक छोटे भाग पर उगाते हैं। ऐसे बीज अधिक उन्नत किस्म के और स्वस्थ होते हैं जो देशी जैविक रूप से उगाएं जाते हैं।
- **सरकारी बीज:** ऐसे बीज जो बड़ी मात्रा में रासायनिक खाद और सिंचाई करके उगाए जाते हैं। इनमें कई प्रकार के कीट व रोग लगने की सम्भावना रहती है, ऐसे बीज की फसल

अच्छी और स्वस्थ नहीं रहती है।

- **हाइब्रिड बीजः** (संकर बीज) ऐसे बीज जो दो प्रजाति के बीज को मिलाकर बनाया जाता है। ऐसे बीज से फसल की पैदावार अधिक होती है लेकिन ऐसे बीजों से उगाई जाने वाली फसल स्वस्थ और अच्छी किस्म की नहीं होती है।
- किसान, देशी ज्ञान, जानकारी और समझदारी के आधार पर देशी बीज तैयार करता है। इसलिए फसल अच्छी और उन्नत किस्म की हो इसके लिए ज़रुरी है कि किसान अपने आप बीज उगाए। इससे समय पर अगले फसल चक्र के लिए बीज आसानी से मिल जाता है।

⇒अच्छा बीज प्रमाणित संस्थान से ही ख़रीदे

⇒तैयार खेत में समय पर बीज बोए

⇒समय पर सावधानी से कटाई करे

⇒छन्नी से छान कर छोटे व बड़े बीज को अलग कर दे, टूटे हुए बीजों को अलग कर दे

⇒किसान अपने बीज को आपस में अन्य किसानो से बदल लेते हैं इसलिए बीज मूल्य कम रहता है

जैविक खेती से जल सरंक्षण (पानी बचाने का सही तरीका)

हरित क्रांति और ओद्यौगिक क्रांति से, पर्यावरण के मुख्य स्रोत पानी को सबसे अधिक नुकसान पंहुचा है। आज भी 75 प्रतिशत खेती बारिश के पानी पर की जाती है। केवल 25 प्रतिशत खेती सिंचाई या दूसरे तरीकों से की जाती है।

एक तरफ जहाँ ज़मीन में पानी का स्तर कम हो गया है वहीं पानी साफ सुथरा नहीं रह गया है। जिसका बुरा असर हमारी फसल व जीवन दोनों पर पड़ रहा है, इसलिए ज़रुरी है कि हम सभी जैविक तरीके से पानी की बचत करने का तरीका सीखें।

हम कई तरह से पानी की बचत कर सकते हैं जैसे गाँव की बंजर ज़मीन में पेड़ लगाकर और खेतों की मेड़ो पर पेड़ लगाकर।

एक ही तरह की खेती करने से भी पानी का स्तर कम हो जाता है। ऐसी फसल उगाए जो कम पानी में अधिक पैदा हो।

⇒बोने के सही तरीके से भी पानी की बचत होती है जैसे गेंहू के बोने से पहले किसान पलेवा करते हैं। यदि तैयार खेत में 1.5 गहरा बीज बोये तो गेहूं का अंकुरण अच्छा होगा और पानी की बचत भी होगी।

⇒जीवांश खाद के उपयोग से जमीन का जल स्तर बढ़ता है।

⇒खेत में उगे खरपतवार को उखाड़ कर फसलों की कतार के बीच में डालने से पानी को बहने से रोका जाता है।

⇒खेत का पानी, खेत में रोकने के लिए चारों और गहरी नाली बना कर जल स्तर बढ़ाया जाता है।

⇒खेत के आस–पास की नालियों को जोड़ कर बड़ी नाली जोड़कर इसे कुए में छोड़ें।

⇒सामान्यतः खेत में पानी ले जाने के लिए बड़ी नाली बनाते हैं जिससे काफी पानी बेकार चला जाता है, पानी का सही उपयोग हो इसके लिए प्लास्टिक पाइप का प्रयोग करें।

बरली संस्थान में जैविक खेतीः बरली संस्थान में जैविक खेती की जाती है जिससे यहाँ का वातावरण साफ सुथरा और हरा–भरा है। यहाँ कई प्रकार के फलों के पेड़ लगाए गए हैं जैसे आम, जामुन, खजूर, अमरुद, नीम्बू, चीकू, शहतुत, करोंदा, कविट आदि। साथ ही आलू, प्याज, लहसुन, भिन्डी, बैंगन, पत्तागोभी, गाजर, मूली, आदि सब्जियाँ और औषधीय पौधे जैसे हल्दी, लहसुन, इलायची, लेमोन घास, आंवला और मेहँदी उगाई जाती है।

खेत में पानी की कमी न हो और पानी का स्तर बढ़ाने के लिए पानी का सही उपयोग किया जाता है जैसे बेकार पानी को छानकर के पाइप से खेत में लाया जाता है।

बारिश के पानी को रोकने के लिए सभी नालियो को कुएं से जोड़ा गया है जिसमे बारिश का पानी भी इकठ्ठा हो जाता है।

किचन व सेप्टिक के पानी को रोककर इसे छान कर खेत में उपयोग करते हैं और स्प्रिनकलर से पानी देते हैं जिससे कम पानी में अच्छी फसल होती है।

यहाँ जैविक खादों का प्रयोग किया जाता है जो की रसोई की झूठन, हरी खाद से बनता है। इससे खेती में खरपतवार भी कम उगती है मिट्टी की ताकत बढ़ती है और खेती अच्छी किस्म की होती है और हमारे स्वास्थ्य को नुकसान नहीं पहुँचाती।

खाद बनाने का तरीका

गुड़ खड़ा	250 ग्राम
गोमूत्र	1.50 लीटर
गोबर	1 किलो
चने की दाल का आटा	250 ग्राम

इस घोल को 20 लीटर की केन में डालकर, केन के मुँह को बारीक कपड़े से बंद करके 21 दिन तक रखें, एक लीटर घोल को 16 लीटर पानी में मिलाए।

सीमेंट की टंकी (3 फिट गहरी, 5 फिट चोड़ी, 10 फिट लंबी) में एक बार हरी खाद डाले (10 तगाड़ी)

घोल का छिड़काव करे (1 लीटर)

एक बार हरी खाद किचन की झुठन, छिलका डाले (10 तगाड़ी) ऐसी पाँच परत तैयार करे जिसमें तीन बार घोल को डाले

ऐसे खाद को तीन हफ्तों तक रखे और उसे अच्छी तरह से मिलाए

ये खाद डेढ़ से दो माह में तैयार हो जाती है।

जैविक खाद बनाने की अन्य विधियाँः–

दलहनी फसलों में प्रति एकड़ 4 से 5 पैकेट राइजोबियम कल्चर डालना पड़ेगा। दलीय फसलों में एजेक्टोबेक्टर कल्चर इनती ही मात्रा में डालें। साथ ही भूमि में जो फास्फोरस है, उसे घोलने हेतु पी.एस.पी. कल्चर 5 पैकेट प्रति एकड़ डालना होगा।

खाद बनाने के लिए कुछ तरीके नीचे दिए जा रहे हैं, इन विधियों से खाद बनाकर खेतों में डालें। इस खाद से मिट्टी की रचना में सुधार होगा, सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या भी बढ़ेगी एवं हवा का संचार बढ़ेगा, पानी सोखने एवं धारण करने की क्षमता में भी वृद्धि होगी और फसल का उत्पादन भी बढ़ेगा। फसलों एवं झाड़, पेड़ों के अवशेषों में वे सभी तत्व होते हैं, जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है।

नाडेप विधि

नाडेप का आकार– लम्बाई 12 फीट, चौड़ाई 5 फीट, उँचाई 3 फीट आकार का गड्डा कर लें। भरने हेतु सामग्री 75 प्रतिशत वनस्पति के सूखे अवशेष, 20 प्रतिशत हरी घास, गाजर घास, पुवाल, 5 प्रतिशत गोबर, 2000 लीटर पानी।

सभी प्रकार का कचरा छोटे–छोटे टुकड़ों में हो। गोबर को पानी से घोलकर कचरे को खूब भिगो दें और फावड़े से मिला दे।

विधि नंबर–1 नाडेप में कचरा 4 अंगुल भरें। इस पर मिट्टी 2 अंगुल डालें। मिट्टी को भी पानी से भिगो दें। जब पुरा नाडेप भर जाए तो उसे 4 अंगुल मोटी मिट्टी से ढ़ांक दें।

विधि नंबर–2 कचरे के ऊपर 12 से 15 किलो रॉक फास्फेट की परत बिछाकर पानी से भिंगो दें। इसके ऊपर 1 अंगुल मोटी मिट्टी बिछाकर पानी डालें। गड्ढा पूरा भर जाने पर 4 अंगुल मोटी मिट्टी से ढांक दें।

विधि नंबर–3 कचरे की परत के ऊपर 2 अंगुल मोटी नीम की पत्ती हर परत पर बिछाएं। इस नाडेप कम्पोस्ट में 60 दिन बाद सब्बल से डेढ़–डेढ़ फुट पर छेद कर 15 टीन पानी में 5 पैकेट पी.एस.बी एवं 5 पैकेट एजेक्टोबेक्टर कल्चर को घोलकर छेदों में भर दें। इन छेदों को मिट्टी से बंद कर दें।

केंचुआ खाद

छायादार स्थान में 10 फीट लम्बा, 3 फीट चौड़ा, 12 इंच गहरा पक्का ईंट सीमेन्ट का ढांचा बनाएं। जमीन से 12 इंच ऊंचे चबूतरे पर यह निर्माण करें। इस ढांचे में आधी या पूरी पची (पकी) गोबर और कचरे की खाद बिछा दें। इसमें 1 फीट में 100 केंचुऐ डाले। इसके ऊपर जूट के बोरे डालकर प्रतिदिन सुबह, शाम पानी डालते रहें। इसमें 60 प्रतिशत से ज्यादा नमी ना रहे। दो माह बाद यह खाद बन जाएगी। जिसका 15 से 20 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से इस खाद का उपयोग करें।

मटका खाद

गौ मूत्र 10 लीटर, गोबर 10 किलो, गुड 500 ग्राम, बेसन 500 ग्राम– सभी को मिलाकर मटके में भरकर 10 दिन सड़ाए। फिर 200 लीटर पानी में घोलकर गीली जमीन पर कतारों के बीच छिटक दें। 15 दिन बाद पुनः इस का छिड़काव करें।

अति उत्तम जैविक खाद बनाने का घरेलू तरीका

गाय का गोबर देशी 15 किलोग्राम, देशी गाय का गोमूत्र 15 लीटर, कोई भी गुड 1 किलोग्राम, कोई भी दाल पीसी हुयी 1 किलोग्राम, पुराने पेड़ के नीचे की मिट्टी या बिना जोती हुयी तालाब या नहर कि मिटटी 2 किलोग्राम, 200 लीटर पानी में मिलाकर ड्रम आदि में अच्छी तरह घोल कर 15 दिन तक सड़ायें। अति उत्तम जैविक खाद तैयार हो जाएगी। यह एक एकड़ भूमि के लिए पर्याप्त है। इसको खाली खेत में सामान मात्रा में छिड़कना चाहिए या बिखेर देना चाहिए और खड़ी फसल में देना हो तो पानी देते समय उसमें मिला दे। यह खाद एक एकड़ के लिए पर्याप्त होगी और ऐसी ही खाद बनाकर 3–4 बार खेत में डालने से यूरिया और अन्य रासायनिक खादों का जिन से किसान कि भूमि बंजर हो चली हो, असर ख़त्म हो जाएगा और इस खाद से उत्तम खेती होगी। यदि यह कई दिन ड्रम में पड़ी रहे और किसी कारण से प्रयोग में न लायी जाय तो भी वह कभी ख़राब नहीं होती। गो मूत्र इकठ्ठा क़रने के लिए रात को जिस स्थान पर गाय बांधे वंहा पक्का होना चाहिए और हल्की सी ढलान होनी चाहिए। जब गाय मूत्र करेगी तो हलकी सी ढलान के कारण गो मूत्र एक जगह इकठ्ठा हो जाएगा और बाहर कि तरफ एक जमीन के अन्दर पक्के गड्ढे बना ले जिसमे जाकर जमा हो जाएगा।

बीजोपचार

⇒प्रति एकड़ बीज हेतु 3 से 5 लीटर देशी गाय का खट्टा मठ्ठा लें। इसमें प्रति लीटर 3 चने के आकार के बराबर हींग पीस कर घोल दें। इसे बीजों पर डालकर भिगों दें तथा 2

घंटे रखा रहने दें। उसके बाद बोयें। इससे उगरा नियंत्रित होगा।

⇒3 से 5 लीटर गौ मूत्र में बीज भिगोकर 2 से 3 घंटे रख दें। उगरा नहीं लगेगा। दीमक से भी पौधा सुरक्षित रहेगा।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की 100वीं वर्षगाठ के उपलक्ष्य में 6–8 मार्च 2011 को तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला हुई। अंतर्राष्ट्रीय संघ ने इस वर्ष का मुख्य विषय, "महिलाओं के लिए सभ्य रोज़गार के

मार्ग हेतु, शिक्षा, प्रशिक्षण, विज्ञान और प्रोद्यौगिकी तक समान पहुँच" घोषित किया था।

इस कार्यशाला का उद्‌घाटन संस्थान परिसर में 6 मार्च 2011 को 11:30 बजे मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) अनुराधा जोशी, संकाय अध्यक्ष (शिक्षा), शिक्षा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर ने किया। श्रीमती वीणा पैठनकर, प्रांतीय अध्यक्ष, भारतीय स्त्री शक्ति ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्रीमती विनीता धर्म, पार्षद, नगर निगम इन्दौर और कनाडा से श्रीमती जोआयस एडमंड्स सलाहकार, सामाजिक एवं आर्थिक विकास, विशेष अतिथि थी।

तीन दिनों के इस कार्यशाला में मुख्यतः स्त्री–पुरूष समानता, विज्ञान व प्रौद्योगिकी, महिला शिक्षा, प्रशिक्षण द्वारा महिला सशक्तिकरण, परिवार और समुदाय में महिलाओं का योगदान विषयों पर चर्चा की गई। कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों ने समाज के सामने स्वयं आगे आने की जरूरत को समझा और अपने–अपने गांवों में लौटकर अपने परिवार, समाज व देश का विकास करने में अपना पूर्ण योगदान कैसे देंगी इस पर परामर्श किया। कार्यशाला का समापन 8 मार्च को हुआ। समापन समारोह की शुरुआत प्रार्थनाओं से की गई तथा मेहमानों का स्वागत संस्थान द्वारा बनाई गई आदिवासी कलाकृतियों से किया गया। स्वागत उद्‌बोधन में डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन ने संस्थान में चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय दिया।

तत्पश्चात प्रतिभागियों द्वारा सीखे गए अनुभवों का आदान–प्रदान किया गया। सुश्री नीतु जमरा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा "महिलाओं को साक्षर होना बहुत

जरूरी है। साक्षरता ही जीवन में आगे बढ़ने की पहली सीढ़ी है जिस पर चढ़कर हम अपना विकास कर सकते है।" रमिला वास्कले ने बताया कि प्रशिक्षण से ही हमारे जीवन का विकास होता है जिससे हम जिम्मेदारी से कोई भी काम कर सकते है। जानू चौहान ने बताया "हमने बरली संस्थान में आकर पहली बार विज्ञान का महत्व समझा। जैसे विज्ञान के बिना धर्म हमें अंधविश्वास की तरफ ले जाता है और धर्म के बिना विज्ञान हमें भौतिकता की तरफ ले जाता है। बरली संस्थान में सोलर चूल्हे पर खाना बनाया जाता है, यह भी एक विज्ञान है।"

प्रशिक्षिकाओं ने भी कार्यशाला के अनुभव बताए। संस्थान के उप प्रबंधक श्री योगेश जाधव ने बताया कि तीन दिनों तक प्रशिक्षणार्थियों ने जिस उत्साह से चर्चाओं में भाग लिया वह प्रशंसनीय हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को खेल खिलाया और उन्हें विज्ञान के बारे में जानकारी दी। महिला सशाक्तिकरण महासंगठन द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कारित संस्थान की प्रशिक्षणार्थियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की। रीना चौहान तथा उनकी सहेलियों ने भिलाली गीत प्रस्तुत किया। चमेली देवी इंस्टिट्यूट की प्रतिभागियों ने नाटक प्रस्तुत किया तथा भुरी किराड़े व सहेलियों ने भिलाली गीत पर समूह नृत्य किया। मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) योगेश्वरी फाटक, निदेशिका

प्रेस्टिज इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट एंव रीसर्च ने बताया कि एक अच्छी सोच का इंसान पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा प्रत्येक मनुष्य को अपनी रूचि के अनुसार अपने चुने हुए विषय में मेहनत करनी चाहिए तथा अपने जीवन में उसे अपनाना चाहिए। अध्यक्षीय उद्‍बोधन में कु. ऐलन ने अपने अनुभव के बारे में बताया कि बरली संस्थान में जिस जिज्ञासा के साथ लड़कियां सीखती है वह सराहनीय है। इंदौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क की छात्रा कु. पूर्वा गौतम् ने बताया कि बरली संस्थान एक परिवार की तरह है। हमें इन बहनों को पढ़ाना अच्छा लगता है और इनसे बहुत कुछ सीखा भी है।

कार्यक्रम का संचालन संस्थान की उपनिदेशिका श्रीमती ताहेरा जाधव ने किया व आभार प्रदर्शन प्रशिक्षणार्थी सुश्री आरती राजगोन ने किया।

कार्यशाला में मध्य प्रदेश के खरगोन, अलीराजपुर, धार, खंडवा, बुरहानपुर, बडवानी, बैतुल और इंदौर जिले के ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों से 45 गाँवों की प्रशिक्षणार्थिंयों और संस्थान के स्टाफ ने भाग लिया।

⇒11 मार्च 2011 को अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर संस्थान की निदेशिका डॉ. जनक पलटा मगिलिगन को बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय के सतत शिक्षा और विस्तार विभाग द्वारा भोपाल में सम्मानित किया गया।

⇒महिला दिवस के अवसर पर महिला सशक्तिकरण महासंघठन द्वारा 7 मई 2011 को कविता एवं कहानी वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता

में संस्थान की प्रशिक्षणार्थी सुश्री ममता सिसोदिया ने पहला पुरस्कार प्राप्त किया। सुश्री रेखा केवट ने तीसरा पुरस्कार पाया और सुश्री आरती राजगोन को विशेष पुरस्कार दिया गया।

जलने के कारण व इलाज की जानकारी

चौइथराम हॉस्पिटल की डॉ. शोभा चमनिया ने संस्थान में प्रशिक्षणार्थियों को जलने के कारण व इलाज के संबंध में

जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हम कई तरह से जल सकते हैं जैसे दिया, अंगारे, चूल्हा, गरम तेल, पटाखों, एल.पी.जी. गैस या बिजली का करंट आदि। जिससे इंसान की जान भी जा सकती है। जलने के बाद चमड़ी खराब हो जाती है। जब शरीर का कोई भी अंग जले तो पानी डालना चाहिए या गीला कपड़ा बाँधना चाहिए। अगर पूरा शरीर जल रहा है तो जलते शरीर को जमीन पर लिटाकर लुढ़काना चाहिए, कंबल लपेटना चाहिए या फिर पानी डालना चाहिए। अगर पूरा शरीर गंभीर रूप से जल गया हो तो मरीज को तुरंत अस्पताल ले जाना चाहिए। उन्होंने जलने से बचने के लिए कुछ सावधानियों के बारे में बताया। केरोसिन का उपयोग आग के पास न हो। बच्चों को केरोसीन से दूर रखना चाहिए और ठंडे स्टोव में केरोसिन भरना चाहिए। प्रेशर वाला स्टोव का इस्तेमाल ध्यान से करना चाहिए। गैस का काम खत्म होते ही नॉब बंद कर देना चाहिए। गैस की पाइप छह महीने में बदलना चाहिए। बच्चे जब रॉकेट, अनार जैसे पटाखे जलाएँ तो उनके साथ रहना चाहिए और सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि थोड़ी सी लापरवाही करने से बच्चों की आँखें जल सकती है और वे अंधे भी हो सकते हैं।

संस्थान को देखने आए मेहमान

- 1 मार्च 2011 को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, इंदौर से डॉ. सुन्दर संस्थान देखने के लिए आए। श्रीमती ताहेरा जाधव ने उन्हें संस्थान का भ्रमण कराया तथा श्रीमती जनक पलटा मगिलिगन ने उन्हें संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी।

• 3 मार्च 2011 को स्टाफ अकादमिक कालेज से 30 शिक्षकों का दल संस्थान देखने के लिया आया। श्रीमती ताहेरा

जाधव ने उन्हें संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी और डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन ने संस्थान पर बना पॉवर पॉइंट दिखाया।

• 4 मार्च 2011 को श्री संजय माने (इंस्पेक्टर जेनेराल ऑफ़ प्रिज़ंस) और श्री पूशोत्तम सोम्कुवर, जेल अधीक्षक, सेंट्रल

जेल, इंदौर को श्रीमती जनक पलटा मगिलिगन ने संस्थान का भ्रमण कराया। उन्होंने संस्थान में हो रहे सूर्य ऊर्जा के उपयोग को देखकर प्रसन्नता जताई और जेलों में भी सोलर रसोई शुरू करने के लिए संस्थान से सहयोग की इच्छा जताई। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को भी पढ़ने और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

• 13 मार्च 2011 को विश्व बंधुत्व आन्दोलन द्वारा 60 महिलाओं के लिए संस्थान परिसर में महिला दिवस मनाया गया। सभी

महिलाओं को संस्थान का भ्रमण कराया गया और संस्थान पर बनी वृत्त चित्र "बरली" दिखाई गयी। इस अवसर पर डॉ. जनक पलटा मगिलिगन ने बहाई धर्म के सिद्धांतों के बारे में जानकारी दी। श्रीमती ताहेरा जाधव ने कार्यक्रम में आए शिक्षकों और माता–पिता के प्रयासों की सराहना की। श्री योगेश जाधव ने महिला दिवस की शुरूआत और महत्व के बारे में बताया। विश्व बंधुत्व आंदोलन की ओर से सिस्टर जसिंदा ने कार्यक्रम का संचालन किया। सभी ने सोलर चाय का आनंद लिया।

बरली की दुनिया ऑनलाईन भी है। इसके पहले वाले अंक www.barli.org के our publications में देख सकते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी

श्रीमती ताहेरा जाधव, श्रीमती ढेडी बागदरे, सुश्री जैनब खातून

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.) फोन न. 0731–2554066

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**